नवोदय टाइम्स
Tue,21 April 2026
Edition: gurgaon, Page no. 3

विश्व धरोहर दिवस : सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की प्रतिबद्धता दोहराई

■ कारीगर आर्थिक सशक्तिकरण पहल के जरिए सतत आजीविका को दिया बढ़ावा

गुड़गांव, 20 अप्रैल (ब्यूरो): विश्व धरोहर दिवस के अवसर पर वेदांता ने अपनी सीएसआर पहलों के माध्यम से भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया।

कंपनी ने वित्त वर्ष 2026 में 8 लाख से अधिक लाभार्थियों को प्रभावित किया है, साथ ही 600 से अधिक कारीगरों का समर्थन किया और विभिन्न क्षेत्रों में 100 से अधिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं मंचों को बढ़ावा दिया। वेदांता लिमिटेड की सांस्कृतिक संरक्षण पहल तीन मुख्य स्तंभों पर आधारित है लुप्त होती कला और परंपराओं का संरक्षण एवं पुनर्जीवन, कौशल विकास और क्षमता निर्माण के माध्यम से आजीविका के अवसर सृजित कर स्थायी आय सुनिश्चित करना, तथा कारीगरों को राष्ट्रीय और वैश्विक मंचों से जोड़कर बाज़ार तक उनकी पहुँच और पहचान बढ़ाना।

महिला कारीगरो द्वारा निर्मित हैंडलूम उत्पाद।

ओडिशा, राजस्थान, असम और छत्तीसगढ़ सहित विभिन्न राज्यों में वेदांता साउरा पेंटिंग, ढोकरा शिल्प, कोसा सिल्क बुनाई, अज्रख ब्लॉक प्रिंटिंग, बांस शिल्प और लोक रंगमंच जैसी विविध कला विधाओं को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रही हैं। सैकड़ों महिला कारीगरों को हैंडलूम, सिल्क, टेराकोटा और जूट आधारित शिल्प में कौशल विकास के माध्यम से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने में सक्षम बनाया है। इन कला रूपों को जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल, जयगढ़ हेरिटेज फेस्टिवल, उदयपुर वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल, कलाहांडी उत्सव, चैती महोत्सव आदि प्रमुख सांस्कृतिक मंचों पर प्रदर्शित किया गया है, जिससे इनकी पहचान में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और कारीगर समुदायों को सीधे बाज़ार तक पहुँच बनाने में मदद मिली है। असम में 'सम्प्रिति माकू हैंडलूम सेंटर' और ओडिशा में 'फैकॉर कला केंद्र' जैसे समर्पित केंद्र जमीनी स्तर पर सांस्कृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत कर रहे हैं।

> "वेदांता में प्रशिक्षण के बाद एक महीने के भीतर मैंने न केवल साधारण दुपट्टे बुनना सीख लिया, बल्कि करघे पर कुशलता से काम करना भी समझ लिया। इससे आने वाले कुछ हफ्तों में मैं उच्च गुणवत्ता वाले कोसा दुपट्टे और साड़ियां स्वतंत्र रूप से बुन सकूँगी।"— **उषा बाई कारीगर लाभार्थी।**